

CD-61 २. सर्वस्व मेरापन अर्पण

सर्वस्व मेरापन अर्पण है, भगवान तुम्हारे शरणोंमें, सु-चरणों में,
आध्यात्मिक आनंद परमानंद, ईस परमहंस के सत्संग में, स्व-संगत में । -सर्वस्व..

मन-वचन-काया छाया, माया के भाव-नो-द्रव्यकरम,
बालककी भ्रांति स्वीकारिये, अनन्य शरण दें भवरण में । -सर्वस्व..

ज्ञानामृत के मोती चुगते, मन-हंसा मान-सरोवर में,
सत्यम्, शिवम् ओर सुंदरम्की, श्री दिव्य-चक्षु की ज्योति में । -सर्वस्व..

सूरजका कैसा तर्पण है ! चंदाके शीतल किरणोंमें,
'समभाव' रखें, निकाल करें, उठतें अन्तर्बन्ध भीतरमें । -सर्वस्व..

रात, दिवस, संध्या, उषा, कैसे अदभुत क्रम नियमबद्ध,
मन-सागर के ज्वार-भाटा, 'निश्चित' और 'व्यवस्थित' है । -सर्वस्व..

जीवन भले अेक 'दर्शन' है, मूल 'आत्म' शाश्वत दर्पण है,
'व्यवहार' हो चाहे कोडों संग, स्व 'निश्चय' केवल भगवन में । -सर्वस्व..

'मूढ आत्मा' का हे उद्धारक ! मुझ 'शुद्धात्मा' जागृत करो,
अपूर्व 'अगोचर' और उल्लसित, झलझल ज्योति प्रकाशित हो । -सर्वस्व..

अनदेखी केडी 'अक्रम' से, जो मोक्षद्वार खुला कर दें,
परमात्म-स्वरूप हे प्रकट पुरुष, आपही मेरे 'शुद्धात्मा' । -सर्वस्व..

जय सच्चिदानंद

